आकाश में
कोरोना घना है...

(कोरोना काल पर केंद्रित कहानी संग्रह)

संकलन एवं सम्पादन

गौरव अवस्थी

आकाश में कोरोना घना है...

(कोरोना काल पर केंद्रित कहानी संग्रह)

आकाश में कोरोना घना है...

(कोरोना काल पर केंद्रित कहानी संग्रह)

संकलन एवं संपादन

गौरव अवस्थी

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

इस पुस्तक में व्यक्त विचार पूरी तरह लेखक के अपने हैं। विवाद की स्थिति में प्रकाशक अथवा मुद्रक उत्तरदायी नहीं होगा। प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक को या इसके किसी अंश को संक्षिप्त, परिवर्धित कर प्रकाशित करना या फिल्म बनाना कानूनी अपराध है।

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

I.S.B.N # 978-81-943185-3-8

4637/20, शॉप नं.-एफ-5, प्रथम तल, हरि सदन,

अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

मो.: 9315436239, 9968288050, 9911866239

ई-मेल: littlebirdinfo21@gmail.com

संपादन : अवैतनिक है

प्रथम संस्करण : 2020

© प्रकाशक

मूल्य : ₹ 150/-

लेज़र कम्पोजिंग : लिटिल बर्ड

मुद्रक : क्लासिक प्रिंटर्स, दिल्ली

रेखाचित्र : अनुभूति गुप्ता एवं हरिमोहन वाजपेयी 'माधव'

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने से पूर्व प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना आवश्यक है।

भूमिका

महामारियों का इंसान से संग-साथ पुराना है। धरती पर साढ़े तीन अरब साल से जीवाणु (बैक्टीरिया) रुतबेदार है। विषाणु (वायरस) भी सभ्यता के विकास क्रम के साथ ही इंसानों के बीच है। सभ्यताओं के साथ ही संक्रमण ने भी महामारी की शक्ल लेनी शुरू कर दी थी। यह संक्रामक रोग सैकड़ों साल से इंसानी जीवन को डसते आए हैं। प्राचीन यूनानी चिकित्सक हिप्पोक्रेट्स ने ईसा पूर्व 400 साल पहले 'एपिडेमिक' शब्द का तब इस्तेमाल किया था जब रोगों को दैवी प्रकोप माना जाता था। इन महामारियों का अपना इतिहास है और महामारी से जुड़े साहित्य का अपना। यह साहित्य ही महामारी के प्रकोप और उनकी भीषणता से नई पीढ़ियों को परिचित कराते चले आ रहे हैं। ज्ञात तथ्य है कि वर्ष 1720 में प्लेग नाम की महामारी फ्रांस के एक शहर से फैली। 2 साल में कई देशों के करीब दो लाख लोग इस महामारी की भेंट चढ़े। पैर पसारती हुई यह महामारी मेवाड़ के रास्ते भारत में आई और काफी तबाही यहाँ भी हुई। 1820 में कालरा,1920 में स्पेनिश फ्लू, 2009 में स्वाइन फ्लू और अब कोरोना (कोविड-19) महामारी। चेचक, हैजा, तपेदिक आदि संक्रामक रोगों ने भी शहर के शहर उजाड़े हैं।

इन महामारियों ने पीढ़ियों को गहरे जख्म दिए, दुख दिए और भय भी। अपने-अपने समय में देश-विदेश के विद्वानों और लेखकों ने महामारी के दौरान उभरी सामाजिक विद्रूपताओं को उकेरा। महामारी किसी को नहीं छोड़ती चाहे वह अमीर हो या गरीब। फ्रांसीसी उपन्यासकार अल्बेयर कामू अपने चर्चित उपन्यास 'प्लेग' में महामारी की व्यापकता और भयानकताओं के बीच समाज की असहिष्णुता सामने लाते हैं। 'कामू' अपनी किताब 'प्लेग' में लिखते हैं कि आदमी के पास प्लेग की महामारी और जीवन के संघर्ष के बीच अंततः केवल ज्ञान और स्मृतियों की धरोहर ही बची रहती है। इस उपन्यास का मूल इंसान

की जिजीविषा में छिपा है। कोलंबियाई कथाकार गाब्रिएल गार्सिया के मार्मिक उपन्यास ''लव इन द टाइम ऑफ कॉलरा'' में प्रेम के लिए जीवन को बचाए रखने की जिद सामने आती है।

गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर अपनी कविता ''पुरातन भृत्य'' (पुराना नौकर) में एक ऐसे व्यक्ति को केंद्र में रखते हैं जो अपने मालिक की सेवा करते-करते चेचक की चपेट में आ जाता है। वर्ष 1903 में गुरुदेव टैगोर की 12 साल की बेटी तपेदिक की चपेट में आकर जीवन गँवा देती है और 4 साल बाद उनका बेटा। महाप्राण निराला ''कुल्ली भाट'' में स्वाइन फ्लू बीमारी से अपनी पत्नी मनोहरा देवी, 1 वर्षीय अनाम बेटी और अन्य परिवारजनों की हुई दुखद मृत्यु के कथानक के साथ महामारी का वर्णन इस प्रकार करते हैं– ''दाह संस्कार के लिए लकड़ियाँ कम पड़ जाती थीं, जहाँ तक नजर जाए गंगा में लाशें ही लाशें दिखती थीं।''

महामारियों पर केंद्रित अतीत का यह साहित्य हमें यह भी बताता चलता है कि ऐसे दौर में समाज कितना हृदयहीन और असहिष्णु हो सकता है। नैतिक मूल्यों के क्षरण की गाथा सुनाने वाला यह साहित्य अपने-अपने समय का मानवीय दस्तावेज भी है। ऐसे साहित्य से गुजरते हुए महसूस होने लगता है कि कालखंड कोई भी हो, संकट के समय के सूत्र एक जैसे ही हैं। हर महामारी में हृदयहीनता, असहिष्णुता और जीने की इच्छा एक समान तत्व के रूप में सामने आई हैं। पहले भी और कोरोना संकटकाल में भी।

यह दस्तावेज ही हमें संकट के हर दौर से परिचित कराते हैं। साहित्य के यह दस्तावेज न होते तो हम आज यह कह पाने की स्थिति में न होते कि समाज वैसा का वैसा ही है, ऊपरी ''बदलाव'' चाहे जो आए-गए हों। कोरोना संकटकाल में भी हम सबने अपनी आँखों से ऐसी ही हृदयहीनता, असहिष्णुता और नैतिक मूल्यों का क्षरण नजदीक से देखा और सुना है। ऐसा नहीं कि महामारी के इस दौर में सब गलत ही हुआ हो, कई सुकून देने वाले उदाहरण भी सामने से गुजरे हैं।

संकट के इस दौर के दस्तावेजीकरण के लिए ही संग्रह की परिकल्पना को नए और पुराने लेखकों-पत्रकारों ने मिलकर पूरा किया है। संग्रह की यह कहानियाँ तीन पीढ़ियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। संग्रह की इन कहानियों में कोरी कल्पना नहीं बल्कि आँखों देखी अनुभूति भी समाई है। इन कहानियों को पढ़ते हुए आप कह पड़ सकते हैं– ''अरे! यह तो हमने भी देखा था...।'' कोई-कोई तो शायद भोगा हुआ भी माने। सामने से गुजरा सच ही भविष्य का

इतिहास कहलाता है। कल्पना की चाशनी रसगुल्ले को रसीला तो बनाती है लेकिन स्वाद तो रसगुल्ले का ही होता है। आपके हाथ तक पहुँची यह कहानियाँ कभी आप का स्वाद कसैला करेंगी और कभी मीठा भी। इनमें संत्रास है तो हास्य भी हैं। राजेंद्र पण्डित की कहानी 'तेरा तुझको अर्पण' या 'फेसबुक लाइव' ऐसी कहानियाँ है जो आपको कोरोना त्रासदी से रूबरू तो कराती हैं लेकिन मंद-मंद मुस्कुराने को मजबूर भी करती हैं। वैसे तो संग्रह की हर कहानी नायाब है लेकिन संध्या सिंह की 'घर कहाँ है' कोरोना महामारी के बीच पलायन के दौरान परबतिया नाम की एक महिला की एक ऐसी त्रासद करुण कथा है जिसे पढ़कर आपके सामने वह सारे दृश्य उभरने लगेंगे जो आपने अपने घर की सड़क के सामने जरूर देखे होंगे। निर्मल गुप्त की 'सच्ची-मुच्ची वाला सरासर झूठ', अनूप मणि त्रिपाठी की 'बादशाह सलामत जिंदाबाद', महेंद्र सिंह की 'मन्नत की डायरी', संतोष त्रिवेदी की 'सन्नाटा', स्नेहलता की 'अब लौट चलें', वात्सल्य राय की 'चली गईं अम्मा जी...', अवधेश पाण्डेय की 'परदेश की कमाई से चलते घर', अमरेश द्विवेदी की अभिषेक सहज की 'लॉकडाउन में मिली सुधा', गौरव तिवारी की 'हम और तुम' कुछ ऐसी कहानियाँ जो भविष्य की पीढ़ियों को कोरोना संकटकाल को सोचने और समझने का मौका देती रहेंगी। अंत में एक महत्वपूर्ण तथ्य की ओर ध्यान दिलाना चाहूँगा कि इस लॉकडाउन की त्रासदी में इन कहानियों में कुछ ऐसे भी किरदार सामने आए हैं जिनके संघर्ष के लिए एक ही शब्द है– 'सलाम'। कहानी रूपी यह 'पुष्प गुच्छ' आप जैसे प्रबुद्ध पाठकों की साहित्यिक पिपासा को सुगंधित करने में रंच मात्र भी सफल रहा तो हम अपने इस श्रम को सार्थक समझेंगे। आपकी छोटी-बड़ी और अच्छी-बुरी हर प्रतिक्रिया हमारी बड़ी पूँजी होगी। आमीन!

साहित्य 'जन' का इतिहास है

वैसे तो गौरव अवस्थी संयमित और शांत किस्म के तेजस्वी पत्रकार और लेखक हैं मगर कभी-कभी वह ऐसे महत्वपूर्ण काम की जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठा लेते हैं जो अपने सरोकारों में बहुत बड़ी होती है और इसी से उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता और उनकी संवेदनशीलता का पता चलता है। **''आकाश में करोना घना है''** कथा संकलन की यह उल्लेखनीय योजना उनके उन्हीं सरोकारों को रेखांकित की जाने वाली साहित्यिक उपलब्धि है।

कोरोना का संकट निर्विवाद रूप से 21वीं सदी की एक ऐसी अनहोनी है जिसने मनुष्य की अपराजेयता को ऐसी चुनौती दी है कि चीन के वुहान से लेकर समस्त विश्व का कोना-कोना मरघट में तब्दील हो गया है। विज्ञान और तकनीकी उपलब्धियां छटपटा रही हैं और खोज रही हैं उसके निदान का फार्मूला। दुनिया को एक पल में नष्ट कर देने का फार्मूला खोज लेने वाले विश्व के सुप्रीम पावर मुल्क भी लाचार विवश हैं इस लाइलाज संक्रामक रोग के सामने। कुछ विज्ञानियों का अनुमान है कि वुहान की प्रयोगशालाएं कोरोनावायरस की जननी हैं और यह चीन का एकतरफा सोचा-समझा वायरस युद्ध है जो विश्व को बता देना चाहता है कि वह किस हद तक और कहां तक जिसको चाहे उसको धरती पर मिटा सकता है। दरअसल सत्य बहुत दिन तक छिपा नहीं रह सकता। मानव मस्तिष्क ने ही मनुष्य की बेहतरी के लिए विज्ञान को अनुसंधानित किया है। दुनिया भर के वैज्ञानिक इस वायरस की तोड़ निकालने में शोधरत हैं और शीघ्र ही वह संक्रामक रोग का वैक्सीन खोज निकालेंगे।

प्राकृतिक विपदाएं हो या विडंबनाएं, अकाल हो या भूकंप, 'जन' की पीड़ा की व्यथा-कथा और संघर्ष की त्रासदी का इतिहास किसी ने लिखा है तो वह

साहित्य ने ही लिखा है और उसके सरोकार हमेशा 'जन' की पैरवी में खड़े नजर आए हैं चाहे वह भारतीय साहित्य हो या वैश्विक हो, ऐसा न होता तो आल्बेयर कामू ''प्लेग'' न लिखते, न रामदरश मिश्र ''जल टूटता हुआ'', न कमलेश्वर ''इतने अच्छे दिन'' लिखते। अनगिनत महत्वपूर्ण रचनाओं के नाम यहाँ गिनाए जा सकते हैं मगर उस विस्तार में जाने की आवश्यकता मुझे महसूस नहीं हो रही है। कहना बस इतना चाहती हूँ कि कोरोनावायरस के वैश्विक हत्याकांड से भला साहित्यकार और साहित्य कैसे निरपेक्ष रह सकता है। जहाँ हालात इतने अविश्वसनीय और विदारक हैं कि अर्थी को कोई कंधा देने वाला नहीं मिल रहा है परिवार के लोग संक्रमण के भय से अपने आत्मीय का चेहरा भी आखिरी बार नहीं देखना चाहते।

परंपराएं, संस्कार और संस्कृति सब कुछ ध्वस्त हुआ पड़ा है। सुबह चिड़ियों की चहचहाहट भी कानों में रुदन घोलते हैं और डोलते हुए पेड़-पौधे आक्सीजन नहीं हवा में वायरस उगलते हुए प्रतीत हैं। ऐसी असाध्य और असंवेदनशील परिस्थितियों में **''आकाश में कोरोना घना है''** का आना 'जन' इतिहास को दर्ज करते हुए, समकालीन रचनाशीलता को अपने सरोकारों के मोर्चे पर सक्रिय और समृद्ध होते हुए पाना है!

कहने में संकोच नहीं और अपनी अल्पज्ञता को भी मैं स्वीकारती हूँ कि **''आकाश में कोरोना घना है''** की कहानियों के अधिकांश लेखक मेरे लिए नए हैं जिन्हें मैंने नहीं पढ़ा। महत्वपूर्ण लेखिका पंखुरी सिन्हा मेरी प्रिय लेखिका हैं लेकिन मुझे स्वीकार करने में कतई गुरेज नहीं कि मेरे लिए अनजान – संकलन में संकलित कई लेखकों की कहानियों ने गहरे संस्पर्शित और उद्वेलित किया है। इसे संयोग ही कहा जाएगा कि **''आकाश में कोरोना घना है''** की अधिकांश कहानियों के विषय लॉकडाउन से उपजी वह अनुशासनात्मक त्रासदी है जिसकी मार से क्षत-विक्षत समाज का संगठित और असंगठित वह दिहाड़ी पर जीने वाला मजदूर वर्ग है जिसकी नैया का कोई खेवईया नहीं है, न उनके प्रदेशों की सरकारें न केंद्र सरकार! लंबे लॉकडाउन के दरम्यिान उनकी दिहाड़ी की बचत इस आस में उनकी अंटी से सरक गई कि शायद लॉकडाउन जल्द ही समाप्त हो जाए और उन्हें फिर काम मिलने लगे। ऐसी विकट परिस्थितियों में उन्हें अपना गाँव-घर याद आया और किसी प्रकार की मदद न मुहैया होने पर वे पैदल ही बारह-तेरह सौ मील की दूरी पर स्थित अपने प्रदेश की ओर चल पड़े कि अगर इस महामारी में जीना-मरना है तो अपने परिवार के साथ वे जिएं-मरेंगे। इन

दिल दहला देने वाले और कलेजा दो टूक कर देने वाले दृश्यों को जब-जब जिसने चैनलों पर देखा, देखने वाले की आँखें भींग गईं।

ऐसे में लेखक के शब्द मूक नहीं रह सकते थे। चैनलों पर देखे गए दृश्य स्मृतियों का हिस्सा हो जाते हैं! लेकिन कहानियों के आर्त पाठ और उनके संघर्षशील चरित्र और उनके मजबूत हौसले पाठक के मर्म को कुरेदते रहते हैं। खड़ा करते हैं प्रतिक्षण कटघरे में पाठक के ज़मीर को, ऐसी ही कहानी कुसुमलता सिंह की है 'ज्योति'!

'ज्योति' कहानी में किशोरी ज्योति का अदम्य साहस देखते ही बनता है जब वह चारों ओर से हताश निराश बीमार पिता को एक पुरानी मजबूत साइकिल का जुगाड़ कर उसके कैरियर पर पिता को बैठा कर दरभंगा में अपने गांव की ओर निकल पड़ती है। दिल्ली से दरभंगा! स्त्री शक्ति का सशक्त उदाहरण है 'ज्योति'। जो कथा-कौशल की बुनावट से रिक्त अपनी सादगी भरी अभिव्यक्ति से बाँध लेती है सुधी पाठकों को।

'लॉकडाउन' अमरेश द्विवेदी की कहानी सोसाइटी के माली चौधरी जिसने हमेशा सोसाइटी के बाग-बगीचा को सींच कर रहवासियों के लिए मनोरम बनाया है। उसी की कोरोना संक्रमण से हुई मृत्यु को लेकर सोसाइटी के सील होने की संभावना को लेकर एक सदस्य की यह प्रतिक्रिया कि– ''मरना था तो गाँव जाकर मर जाता ना'' उपभोक्तावाद की अमानवीय पराकाष्ठा का उदाहरण है। ''बादशाह सलामत जिंदाबाद'' अनूपमणि त्रिपाठी की उल्लेखनीय व्यंग्यात्मकता से पगी सत्ता को कटघरे में खड़ी करने वाली सधी रचना है। संध्या सिंह की ''कुकनूस'' में उन्होंने कहानी की नायिका परबतिया के पति शंकर के न मिलने के बावजूद बिहार जा रहे मजदूरों के साथ बैठा दिया कि वह अपने गाँव आरोही हिंगना जो फणीश्वरनाथ रेणु का भी गाँव है--पहुँच जाएगी लेकिन जिस मजदूर का मोबाइल नंबर लेकर उसको परबतिया की जिम्मेदारी दी थी उसे ठीक-ठीक आरोही हिंगना पहुँचाने की, कई बार नंबर मिलाने के बावजूद कोई नंबर नहीं उठाता। नरेटर चिंतित है परबतिया के लिए लेकिन क्या करे विवश है। आरोही हिंगना को कथा में विनयस्त बहुत सुंदर प्रयोग किया है संध्या जी ने।

किन-किन का नाम लूँ और किनको छोड़ूँ समझ नहीं पा रही फिर भी कुछ विशिष्ट और उल्लेखनीय कहानियों का नाम मैं जरूर रेखांकित करना चाहूँगी। ''ऐसा कभी न हो'', ''सावन मास बहे पुरवइया'', ''मन्नत की डायरी'',

''तेरा तुझको अर्पण'', ''नीम तले'', ''मिडिल क्लास'', ''दुखों का लॉकअप'', ''गृहस्थी'', ''मीठा सवाल'' आदि कुछ ऐसी ही कहानियाँ हैं। कोरोना महामारी से आशंकित, डरा, सहमा भीतर तक हिला हुआ लॉकडाउन में बंद समाज जो अपनी सामाजिकता से कट कर जी रहा है उस मनोविज्ञान को 'जन' इतिहास के पृष्ठों में उकेरना आसान काम नहीं किसी भी रचनाकार के लिए।

मैं खुले मन से सभी रचनाकारों को शुभकामनाएँ और बधाई देना चाहती हूँ कि उन्होंने महामारी के इस संकटकाल को जिन मानवीय बहुआयामी पक्षों के साथ उसकी नब्ज़ पर हाथ रखने की कोशिश की है वह बड़े धैर्य और सहिष्णुता की बात है। **''आकाश में कोरोना घना है''** के संपादन और महत्वपूर्ण संयोजन के लिए मैं गौरव अवस्थी को अपनी हार्दिक बधाई प्रेषित करती हूँ। आमीन!

आपकी

चित्रा मुद्गल
18.07.2020
दिल्ली

संस्कार के बारे में

कोरोना महामारी में वर्ष 2020 एवं आजतक लाखों लाख महिला-क्या पुरुष, क्या बच्चे-क्या बुजुर्ग, क्या किशोर, क्या जवान, पूरी दुनिया में सभी को कुछ न कुछ सबक दिए हैं और दे ही रही है। एक तरह से अभी यह क्रम जारी है। जब दुनिया ज्ञान-विज्ञान में इतनी तरक्की कर चुकी है, तब इस महामारी की चपेट में पूरी दुनिया में आज तक कई लाख लोग आ चुके हैं। मौत का आँकड़ा चार लाख के पार है। आप भी इस बात से सहमत ही होंगे कि अगर दुनिया के सभी देश अपने यहाँ हुई मौतों का सही-सही आँकड़ा दें तो तस्वीर और भयावह ही दिखेगी।

इस महामारी के आने के पहले यह सोचना तक मुश्किल था कि बेतरह भागती-दौड़ती जिंदगी को रोका या थामा भी जा सकता है लेकिन इस माइक्रो यूनिट से भी कम वजन वाले ‘अदृश्य दुश्मन’ ने पूरी दुनिया की रफ्तार थाम दी। जिंदगी के मायने बदल दिए। जीवन को एक ऐसी दिशा में मोड़ दिया जहाँ सब कुछ होकर भी किसी के पास कुछ भी नहीं था। सब अपने-अपने ऊपर वाले के ‘सहारे’ हो गए या पूर्वजों के बनाए उन ‘संस्कारों’ के करीब हो गए जिन्हें चकाचौंध भरी जिंदगी में भुला ही दिया था या भूल गए थे।

अब यह महसूस किया जाने लगा है कि ‘कोरोना काल’ में मिले सबक आगे की जिंदगी में कैसे याद रखे जाएँ और कैसे ऐसी महामारी से खुद को और अपनी भावी पीढ़ियों को बचाए रखा जाए हालांकि जिन परंपराओं और संस्कारों को हमारी पीढ़ी भूल चुकी है, उन संस्कारों में जीवन सुरक्षित और स्वस्थ रखने के सूत्र समाहित हैं। आज कोरोना काल में सभी तरह के माध्यमों में एक संदेश बहुत प्रचलन में है ‘स्वस्थ रहें-सुरक्षित रहें’। हमें लगता है कि आज की पीढ़ी

इस संदेश के केवल शब्दों को ही आत्मसात कर रही है। स्वस्थ और सुरक्षित कैसे रहा जाता है, इस पर उसका ध्यान कम ही है।

यही वह सही समय है जब हम अपनी पैदा हो चुकी और आने वाली संतानों को पुराने संस्कारों से संपन्न करने के साथ ही कोरोना संकटकाल में मिले 'सबकों' को भी एक नए संस्कार के रूप में परिचित करा दें। गर्भ में बच्चे के आने, पढ़ाई के लिए गुरुकुल जाने और हिंदू धर्म में विवाह से लेकर मृत्यु बाद तक 16 तरह के संस्कारों से संपन्न करने की व्यवस्थाएँ-प्रक्रियाएँ पहले से ही निर्धारित हैं। अब बहुत कम लोग ही होंगे जो इन संस्कारों को और उनके उद्देश्य से जानते-समझते हों। कई संस्कारों के नाम आपने भी सुने होंगे लेकिन यह संस्कार किस हेतु संपन्न होते हैं, शायद ही हमें और आपको इसकी जानकारी हो।

आइए! पहले हिंदू धर्म के इन संस्कारों को जान लिया जाए-

1. **गर्भाधान संस्कार**– यह संस्कार विषय-आनंद नहीं बल्कि उत्तम संतान प्राप्ति का यज्ञ कर्म है। इस संस्कार के लिए अच्छे विचार, पावन एवं निश्चल मानसिकता, तपःपूत चिंतन एवं संयम शक्ति अपरिहार्य तत्व हैं। यह संस्कार विवाह संस्कार की पूर्णता को व्यक्त करता है। गर्भाधान संस्कार होने पर मातृगर्भ में आत्मरूप जीव की प्रतिष्ठा हो जाने पर ही आगे के संस्कार संभव हैं। इस दृष्टि से गर्भाधान संस्कार का सर्वोपरि महत्व है। यथाविधि संस्कार के संपन्न होने पर पंचतत्वों की, पंचकोशों की तथा माता से उत्पन्न होने वाले त्वक, मांस, शोणित एवं पिता से उत्पन्न होने वाले अस्थि, स्नायु एवं मज्जा– इन धातुओं की शुद्धि हो जाती है।

2. **पुंसवन संस्कार**– यह संस्कार महिला के गर्भधारण के प्रतीत होने पर दूसरे या तीसरे महीने में संपन्न होता है। गर्भस्थ शिशु के स्वस्थ रहने के लिए गौरी-गणेश का पूजन करने का विधान निश्चित है। वटवृक्ष के भाग के अंकुर भी पूजे जाने का विधान है।

3. **सीमंतोन्नयन संस्कार**– सीमंत का अर्थ है स्त्री के केश की विभाजक रेखा यानी भरी जाने वाली माँग। इस संस्कार में पति गर्भवती के सौभाग्यशाली और सुमंगली होने की प्रार्थना करता है। यह संस्कार गर्भधारण के छठे या आठवें माह में संपन्न होता है। माना जाता है कि गर्भस्थ शिशु शिक्षण योग्य हो जाता है। गर्भस्थ शिशु के बुद्धिमान और विवेकपूर्ण होने के लिए गर्भवती को सत-साहित्य पढ़ने, वीरगाथाएँ सुनने और संगीत में रुचि लेने की सलाह इसी संस्कार का हिस्सा है।

4. **जात कर्म संस्कार**– शिशु के दुनिया में कदम रखने यानी पैदा होने और नाल कटने के पहले पिता द्वारा यह संस्कार संपन्न करने का विधान है। पिता द्वारा सुवर्ण सलाई (सोने की पतली डंडी) से पिता नवजात की जीभ (जिह्वा) पर शहद से सरस्वती शब्द लिखने का विधान हमारे पूर्वजों ने निर्धारित किया है।

5. **षष्ठी एवं राहुवेध संस्कार**– माना जाता है कि नवजात शिशु के लिए जन्म और छठे दिन की रात्रि अनिष्टकारिणी होती है। षष्ठी देवी शिशुओं की अधिष्ठात्री देवी मानी गई हैं। इसलिए जन्म के छठे दिन बच्चे और सूतिका की रक्षा के लिए इस संस्कार का विधान तय किया गया।

6. **नामकरण संस्कार**– स्मृति संग्रह के अनुसार व्यवहार की सिद्धि, आयु और वृद्धि के लिए नामकरण संस्कार जरूरी है। आचार्य बृहस्पति के अनुसार 'नाम अखिल व्यवहार एवं मंगलमय कार्यों का हेतु है'। स्वयं ईश्वर के अनंत नाम हैं। लोक व्यवहार की सिद्धि बिना नाम संभव नहीं। इस संस्कार में नामकरण की भी एक प्रक्रिया और विधान तय है।

7. **निष्क्रमण संस्कार एवं सूर्यावलोकन**– 'चतुर्थे मासे निष्क्रमणिका' अर्थात जन्म के चौथे मास में निष्क्रमण संस्कार संपन्न किया जाता है। निष्क्रमण कर्म के पहले शिशु को घर के अंदर ही रखने का विधान है। इस संस्कार के दिन सूतिका ग्रह के बाहर लाकर बच्चे को सूर्य का दर्शन कराती है। माना जाता है कि शिशु की आँखें चार मास तक कोमलतावश कच्ची रहती हैं। सूर्य के तीव्र प्रकाश का दुष्प्रभाव उसकी आँखों में पड़ सकता है।

8. **अन्नप्राशन संस्कार**– पारस्कर ग्रह सूत्र में बताया गया है कि यह संस्कार बालक के उत्पन्न होने के छठ मास में संपन्न होता है। आयुर्वेद के ग्रंथों में भी पहली बार अन्न सेवन करने का यही समय दिया गया है। बालक को प्रथम बार सात्विक पवित्र मिष्ठान खिलाना अन्नप्राशन संस्कार कहलाता है।

9. **चूड़ाकरण (मुंडन) संस्कार**– 'चूड़ा क्रिएते अस्मिन', इस कथन के अनुसार चूड़ाकरण संस्कार का अभिप्राय है वह संस्कार जिसमें बालक को चूड़ा अथवा शिखा धारण कराई जाए। इसको मुंडन संस्कार भी कहते हैं। यह संस्कार बल, आयु एवं तेज की वृद्धि के लिए किया जानेवाला संस्कार है। मनु जी ने इस संस्कार के विषय में कहा है कि जन्म से प्रथम या तृतीय वर्ष में बालक का चूड़ा कर्म करना चाहिए।

10. **अक्षरारंभ (पाटी पूजन) संस्कार**– यह संस्कार क्षर (जीव) का अक्षर (परमात्मा) से संबंध कराने वाला संस्कार है। इस संस्कार की मानव जीवन में महती भूमिका है। गीता में स्वयं भगवान अक्षय की महिमा बताते हुए कहते

हैं कि अक्षरों में 'अ' कार मैं ही हूँ। इसलिए पाटी पूजन में प्रारंभ में 'नमः सिद्धिम' ही लिखाया जाता है।

11. **कर्णछेदन संस्कार–** इसे कर्णवेध संस्कार भी कहा जाता है। यह जन्म के तीसरे अथवा पाँचवें वर्ष में संपन्न होता है। इसमें यथाविधि बालक अथवा बालिका के दाहिने और बाएँ कान का छेदन होता है।

12. **उपनयन संस्कार (जनेऊ)–** बालक को विद्या अध्ययन के लिए ले जाने को उपनयन कहते हैं। बालक के पिता आदि अपने पुत्र को विद्या अध्ययन के लिए आचार्य के पास ले जाएँ यही उपनयन शब्द का अर्थ है। बालक में योग्यता आ जाए इसलिए विशेष कर्म द्वारा उसे संस्कृत किया जाता है। उसे संस्कृत करने का संस्कार ही उपनयन या यज्ञोपवीत संस्कार है।

13. **वेद आरंभ संस्कार–** उपनयन संस्कार के ही दिन वेद आरंभ संस्कार कर लेते हैं। नाम से ही स्पष्ट है कि इस संस्कार में आचार्य के द्वारा ब्रह्मचारी को अपनी वेद शाखा का ज्ञान और मंत्रोपदेश कराया जाता है।

14. **विवाह संस्कार–** विवाह के अनंतर ही ब्रह्मचर्य आश्रम अवस्था की पूर्णता होती है और गृहस्थ आश्रम में प्रवेश होता है। मनु जी ने बताया है कि आयु का द्वितीय भाग अर्थात 25 से 50 वर्ष की अवस्था विवाह के अनंतर गृहस्थ आश्रम में व्यतीत करना चाहिए। सभी प्रकार के आश्रमों का मूल गृहस्थाश्रम होता है।

15. **विवाह अग्निपरिग्रह संस्कार एवं त्रेता अग्नि संग्रह संस्कार–** विवाह के बाद जब वर-वधू अपने घर आने लगते हैं तब उस स्थापित आदमी को घर लाकर यथावत स्थापित करके उसमें प्रतिदिन अपनी कुल परंपरा के अनुसार सायं-प्रातः नित्य करने का विधान है। गृहस्थ के लिए दो प्रकार के शास्त्रीय कर्मों को करने की विधि है। 1. श्रोतकर्म 2. स्मार्तकर्म। पंच महायज्ञ आदि पार्क यज्ञ संबंधी जो कर्म हैं वह स्मार्तकर्म कहे जाते हैं। यह अग्नि कभी बुझनी नहीं चाहिए अतः इसकी प्रयत्नपूर्वक रक्षा का विधान है। श्रोतकर्म का संपादन त्रेता अग्नि में होता है।

16. **अंत्येष्टि संस्कार–** जीवन की सद्गति के उद्देश्य से मरणासन्न अवस्था में किया जाने वाला दान आदि कृत्य तथा मृत्यु के तत्काल बाद का दाहादि कर्म अंत्येष्टि संस्कार कहलाता है। अंत्येष्टि शब्द अनंत्य एवं इष्टि दो पदों के योग से बना है। अनंत्य का अर्थ है अंतिम और इष्टि का सामान्य अर्थ है यज्ञ। पहला संस्कार है आधान अर्थात गर्भाधान और अंतिम संस्कार है अंत्येष्टि।

हम, आप खुद ईमानदारी से सोचें, पूर्वजों द्वारा निर्धारित इन संस्कारों में से आज हम कितने संस्कारों का विधि-विधान से पालन कर रहे हैं। आज कुछ

ही संस्कार याद रह गए हैं। पालन उनका भी नहीं हो रहा। कोरोना महामारी से उपजा यह संकट एहसास करा रहा है कि हमें बच्चों को स्वस्थ और सुरक्षित रखने के लिए इन संस्कारों से एक बार फिर अपने को जोड़ना ही होगा। इन संस्कारों में हमारे हिंदू धर्म की जड़ें हैं। आप सोचिए, इन जड़ों से जुड़े बिना कैसे हम अपने बच्चों को स्वस्थ और सुरक्षित रख सकते हैं।

हाँ, एक बात और है। कोरोना संकट से मिले सबक को भी हमें एक नए **'संस्कार'** के रूप में अपनाना होगा। हम भारतीयों की एक बुरी आदत है—भूलने की। हमारे पूर्वजों में बुरी बातें भूल जाने और अच्छी बातें याद रखने की आदत थी लेकिन अब जमाना उलटा है। आज के लोगों में अच्छी बातें भूलने और बुरी बातें याद रखने का चलन बढ़ चुका है। कहते हैं हर अच्छाई में बुराई और हर बुराई में कोई न कोई अच्छाई छिपी होती है। माना कि कोरोना संकट एक ऐसा ही बुरा दौर है लेकिन यह अपने साथ एक अच्छाई लेकर भी आया है। वह अच्छाई है जीवन को अच्छे तौर-तरीकों के साथ जीने की। कोरोना संकट कह रहा है कि आप अपने जीवन में नियम और संयम से रहें और सतर्क भी। चूँकि समय बुरी बातें याद रखने का है। इसलिए बहुत संभव है कि कोरोना संकट तो हमें याद रह जाए पर इस संकट से उपजी कुछ अच्छी बातें हम समय के साथ भूल जाएँ। इसलिए जरूरी है कि अपनी नई पीढ़ी के 'आचार्य' हम खुद ही बनें और उन्हें इस संकट से उपजी अच्छी बातें नई परंपरा और संस्कार के रूप में देकर जाएँ।

पूर्वजों ने अनुभव की चक्की में पिसकर स्वस्थ और सुरक्षित जीवन के लिए ही संस्कार बनाए। हम उनका तो पालन करें ही, साथ ही नए 'कोरोना संस्कार' की प्रक्रियाएँ निर्धारित करके नई पीढ़ी में रोपित करने की कोशिश आज से नहीं अभी से शुरू कर दें। कोरोना वायरस से बचाव के उपायों को ही हमें 'कोरोना संस्कार' के रूप में विकसित करना चाहिए। इसके लिए सबसे पहले हमें खुद इनका पालन करना होगा। आचार-विचार की हमारी अपनी पाठशाला में इन्हें नई पीढ़ी पढ़ेगी तो खुद-ब-खुद अपनाने को मजबूर होगी। नई पीढ़ी को बताइए, इसलिए नहीं कि सरकार कह रही है, इसलिए कि समय के साथ यह करना जरूरी हो गया है।

क्या हों कोरोना संस्कार–

– साबुन से कम से कम आधा मिनट तक हाथ जरूर धोएँ।

– बाहर से आकर कपड़े धो लें या संभव न हो तो ऐसे किसी स्थान पर रखें जहाँ से संक्रमण न हो।

– घर के अंदर हों या बाहर, फेस मास्क का उपयोग जरूर करें।

– दो गज की दूरी बनाकर ही सबसे मिलें-जुलें।

– हाथ मिलाने की पाश्चात्य संस्कृति के बजाए अपनी भारतीय संस्कृति की हाथ जोड़कर नमस्ते करने की परंपरा बनाएँ।

– सुबह और शाम 30 मिनट योगा एवं प्राणायाम करें।

– खान-पान में संयम रखें। पौष्टिक खाद्य सामग्री खाएँ।

– किसी भी वस्तु और सामान को विसंक्रमित किए बिना उपयोग न करें।

– उतना ही धन और साधन जुटाएँ जितना जीवन के लिए जरूरी हो।

अगर हम अपनी नई पीढ़ी को नया संस्कार दे पाने में सक्षम हुए तो विश्वास मानिए कि सदियों बाद भी कोरोना और कोरोना जैसे तमाम घातक वायरस मानव जीवन को कोई नुकसान नहीं पहुँचा पाएँगे।

–गौरव अवस्थी

अनुक्रम

•	भूमिका		v
•	साहित्य 'जन' का इतिहास है		ix
•	संस्कार के बारे में		xiii
1.	सच्ची-मुच्ची वाला सरासर झूठ	— निर्मल गुप्त	1
2.	ज्योति	— कुसुमलता सिंह	4
3.	लॉकडाउन	— अमरेश द्विवेदी	11
4.	बादशाह सलामत ज़िंदाबाद	— अनूप मणि त्रिपाठी	17
5.	कुकनूस	— संध्या सिंह	23
6.	ऐसा कभी न हो	— स्नेह लता	33
7.	सावन मास बहे पुरवैया	— पंखुरी सिन्हा	41
8.	सन्नाटा	— संतोष त्रिवेदी	53
9.	तेरा तुझको अर्पण...	— राजेन्द्र पण्डित	56
10.	फेस बुक लाइव	— राजेन्द्र पण्डित	58
11.	चली गईं अम्मा जी	— वात्सल्य राय	60
12.	मन्नत की डायरी	— महेन्द्र सिंह	68
13.	परदेश (प्रवास) की कमाई से चलते घर	— अवधेश पाण्डेय	72
14.	करुणा	— प्रियंका भारद्वाज	74
15.	चुभन	— सविता आनंद	76
16.	लॉकडाउन में मिली सुधा	— अभिषेक सहज	79
17.	स्टोर रूम...	— दुर्गा शर्मा	89
18.	दोस्त न होता तो	— नागेन्द्र बहादुर सिंह चौहान	95

19.	बैल	– अनूप मणि त्रिपाठी	99
20.	अब लौट चलें	– स्नेह लता	104
21.	नीम तले...!	– कोमल नारायण त्रिपाठी	110
22.	बस हम और तुम	– गौरव तिवारी	112
23.	दुखों का लॉकअप	– गौरव अवस्थी	115
24.	जलेबीनामा...	– राजेन्द्र पण्डित	119
25.	गृहस्थी	– राकेश द्विवेदी	121
26.	मिडिल क्लास	– राजेन्द्र पण्डित	125
27.	इंतजार कड़वा या बीमार?	– गौरव तिवारी	127
28.	मीठा सवाल	– सना आफ़रीन	129
29.	कलयुगी कोरोना गुरु	– शेफाली सुरभि	131

सच्ची-मुच्ची वाला सरासर झूठ

– निर्मल गुप्त

वह वापस गाँव जा रहा है। बाल-बच्चों के साथ वह घर जाने के लिए पैदल ही चल दिया है। रास्ते में पता लगा कि सरकार मेहनत-मजदूरी करने वालों के लिए काफी कुछ करने वाली है। यह भी खबर मिली कि सरकार बहादुर ने सहायता के लिए काफी कुछ करना शुरू भी कर दिया है। जनधन खाते में नकद रकम आ रही है। उसने खुद से कहा– हुम्म और लगातार चलता रहा। चलते-चलते बच्चों के पाँव थके तो बहला दिया– अपन अगली बार ठण्डी रेलगाड़ी से चलेंगे। बच्चे खुश हो गये। घरवाली जानती है कि यह महज दिलासा है, वैसी ही जैसे पत्थर उबालती रही रात भर माँ, बच्चे तसल्ली खाकर सो गए। फिर भी उसने घरवाले की हाँ में हाँ मिलाई। उसे पता है कि यह बड़ी मुश्किल घड़ी है। मिलजुलकर ही यह कठिन वक्त कट पायेगा।

वे रोजगार की तलाश में राजधानी जाने को बाल-बच्चों को साथ लिए ट्रेन की जनरल बोगी में सवार हो आये थे। वे कुछ इस तरह से लदे-फँदे सफर में रहे जैसे मालगाड़ी में आलू, प्याज, सूखी मछली, चावल, आटा, इमली के बीज, हींग की डिबियों से भरे डिब्बे, गोरी रंगत बनाने वाली क्रीम के छोटे-बड़े मर्तबान, करेले का अचार, मूँग की दाल की मँगोरी, घिये का जूस, गिलोय का स्वादिष्ट शरबत, पालतू श्वानों के लिए प्रोटीनयुक्त बिस्कुट, गिलहरियों के लिए आयातित अखरोट आदि लोकल और वैश्विक आइटम महागोदामों और कोल्ड स्टोरेज से निकल बिचौलियों और आढ़तियों की गाँठ भरने के लिए उनके ठिये तक पहुँचने हेतु रवाना होते हैं।